http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

वर्ष : 18
अंक : 134

प्रयागराज गुरुवार 30 जनवरी 2025

पृष्ठः– 4, मूल्यः– एक रुपया

महाकुंभ से सस्ते में पहुंचा जा सकता है विदेश

2 फरवरी

नई दिल्ली- प्रयागराज	मुंबई- प्रयागराज
10,000- 28,135	14,908- 32,501

नई दिल्ली- मालदीव	नई दिल्ली- बाली-	नई दिल्ली- वियतनाम-
16,833	22,291	13,335

नई दिल्ली- बैंकॉक	नई दिल्ली- दुबई
10,527	17,974

नोट: सभी कीमतें डायरेक्ट फ्लाइट की रुपए में हैं। | **सोर्स:** स्काई स्कैनर

लगाई गई आस्था की डुबकी

● **मौनी अमावस्या से पहले ही दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला शहर बना महाकुंभ नगर, आज ये आंकड़ा होगा पार!**

प्रयागराज,(एजेंसी)। महाकुंभ नगर मौनी से पहले ही दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। आज तीन सबसे अधिक जनसंख्या वाले शहरों की कुल आबादी को भी पार करने की संभावना है। दिल्ली से अधिक जापान की राजधानी टोक्यो की आबादी 3.74 करोड़ है। मौनी अमावस्या से एक दिन पहले मंगलवार को ही महाकुंभ नगर दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। मौनी अमावस्या के दिन तो दुनिया के तीन सबसे बड़े शहरों की कुल आबादी को पार करने की उम्मीद है। देश में सबसे अधिक आबादी दिल्ली की 2.93 करोड़ है। दिल्ली दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर है। दिल्ली से अधिक जापान की राजधानी टोक्यो की आबादी 3.74 करोड़ है। वहीं मंगलवार को दिन में चार बजे तक ही 3.90 करोड़ लोग संगम स्नान कर चुके थे। इस तरह से गंगा की रेती पर 45 दिनों के लिए अस्थाई तौर पर बसाया गया महाकुंभ नगर मंगलवार को दिन में चार बजे ही दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। वहीं जिले की आबादी 70 लाख से अधिक है। इस आबादी को भी जोड़ दिया जाए तो टोक्यो की आबादी काफी पीछे छूट जाएगी। गौर करने वाली बात यह भी है संगम स्नान का यह आंकड़ा शाम चार बजे तक का है। जबकि, संगम स्नान के लिए आने वालों का रेला इसके बाद भी बना हुआ था। मौनी अमावस्या पर बुधवार को तो आबादी के सारे रिकॉर्ड टूटते दिख रहे हैं। बुधवार को महाकुंभ नगर में कम से कम 10 करोड़ लोगों के स्नान की उम्मीद है। इसमें जिले की आबादी 70 लाख जोड़ दी तो उस दिन जिले में 10.70 करोड़ लोगों के आने की उम्मीद है। वहीं दुनिया के तीन सबसे अधिक आबादी वाले शहरों में टोक्यो, दिल्ली और शंघाई की कुल जनसंख्या 9.30 करोड़ के करीब है। शंघाई की आबादी 2.63 करोड़ है। इस तरह से मौनी अमावस्या पर संभावित आंकड़ों के अनुसार स्नानार्थी आए तो महाकुंभ नगर की जनसंख्या तीन बड़े शहरों की कुल आबादी से अधिक होगी। दो दिनों तक देश का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर बना रहा प्रयागराज मंगलवार को देश का सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया और भीड़ को देखते हुए अभी अगले दो–तीन दिनों तक इस स्थान पर रहने की उम्मीद है।

यमुना का पानी प्रधानमंत्री भी पीता है: पीएम

● **यमुना जी में ही डूबेगी आप–दा वालों की लुटिया, केजरीवाल पर पीएम मोदी का पलटवार, बोले- पानी पिलाना धर्म, कोई कैसे कह...**

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। मोदी ने साफ तौर पर कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि ऐसी ओछी बाते करने वालों को दिल्ली इस बार सबक सिखाएगी। इन आप–दा वालों की लुटिया यमुना जी में ही डूबेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि अपने राजनीतिक स्वार्थ में आप–दा वालों ने एक और घोर पाप किया है और ये पाप कभी भी माफ नहीं हो सकता है। अरविंद केजरीवाल और आतिशी के हरियाणा पर यमुना नदी के पानी में जहर घोलने के आरोप के बाद से सियासत तेज हो गई है। इन सबके बीच पीएम नरेंद्र मोदी ने इसको लेकर अरविंद केजरीवाल पर पलटवार किया है। मोदी ने कहा कि आप–दा वाले कह रहे हैं कि हरियाणा वाले दिल्ली के पानी में जहर मिलाते हैं। ये सिर्फ हरियाणा का नहीं बल्कि भारतीयों का अपमान है, हमारे संस्कारों का अपमान, हमारे चरित्र का अपमान है। ये वो देश है, जहां पानी पिलाना धर्म माना जाता है। इस देश के लोगों पर ऐसा झूठा आरोप कि कुछ भी बोल रहे हैं। मोदी ने साफ तौर पर कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि ऐसी ओछी बाते करने वालों को दिल्ली इस बार सबक सिखाएगी। इन ।।ऌ–दा वालों की लुटिया यमुना जी में ही डूबेगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि अपने राजनीतिक स्वार्थ में आप–दा वालों ने एक और घोर पाप किया है और ये पाप कभी भी माफ नहीं हो सकता है। दिल्ली के एक पूर्व मुख्यमंत्री ने हरियाणा के लोगों पर घिनौने आरोप लगा दिए हैं। हार के डर से आप–दा वाले बौखला गए हैं। क्या हरियाणा दिल्ली से अलग है? क्या हरियाणा वालों के बच्चे, परिवार और नाते–रिश्तेदार दिल्ली में नहीं रहते। क्या हरियाणा के लोग अपने ही बच्चों के पानी में जहर मिला सकते हैं। नरेंद्र मोदी ने कहा कि हरियाणा का भेजा हुआ यही पानी दिल्ली में रहने वाला हर कोई पीता है, पिछले 11 साल से ये प्रधानमंत्री भी पीता है, सभी न्यायमूर्ति और बाकी सभी सम्मानित लोग भी पीते हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि गलती माफ करना भारत के नागरिकों का उदार चरित्र है। लेकिन जानबूझकर, बद इरादे से पाप करने वालों को न दिल्ली कभी माफ करती है, न देश माफ करता है। मोदी ने कहा कि आप सभी को इनकी (आप–दा वालों की) एक और चाल से सावधान रहना है।

'मेला प्रशासन के निर्देशों का पालन करें'

● **अफवाहों पर ध्यान न दें, सीएम योगी की श्रद्धालुओं से अपील**

लखनऊ,(एजेंसी)। महाकुंभ में पवित्र डुबकी की आस लिए महाकुंभ नगर पहुंचे श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित प्रमुख संतों ने लोगों से खास अपील की है। योगी ने कहा कि श्रद्धालुगण मां गंगा के जिस भी घाट के समीप हैं, वहीं स्नान करें, संगम नोज की ओर जाने का प्रयास न करें। स्नानार्थियों के लिए कई घाट बनाए गए हैं, जहां सुविधाजनक रूप से स्नान किया जा सकता है। महाकुंभ में हुई भगदड़ के बाद मुख्यमंत्री योगी ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वह संगम नोज जाने के बजाय निकट के घाट पर स्नान कर लें। सीएम योगी ने कहा है कि स्नान के लिए कई घाट बनाए गए हैं। लोग वहां स्नान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में प्रशासन के नियमों का ध्यान रखें और किसी प्रकार की अफवाह में न आएं। अखाड़ों में नहीं होगा अमृत स्नान मौनी अमावस्या पर भारी भीड़ और भगदड़ की घटना के चलते सभी अखाड़ों ने अमृत स्नान न करने का एलान किया है। यह एलान अखाड़ा परिषद अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र गिरी ने निरंजन छावनी से किया। अखाड़ा परिषद अध्यक्ष ने कहा जिस तरह से श्रद्धालुओं की भीड़ है और भगदड़ की घटना सामने आई है उससे अखाड़े ने स्नान न करने का फैसला लिया है। अखाड़े के वहां जाने से स्थिति और भी बिगड़ सकती थी। संयम बरतने की अपील मौके से सामने आए वीडियो के अनुसार कुछ महिलाओं और बच्चों को भी चोट लगी है। अभी हालात काबू में बताये जाते हैं। महाकुंभ नगर प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अफवाहों पर ध्यान न देने और संयम बरतने की अपील की है। बताया जाता है कि प्रयागराज के संगम तट पर अमृत स्नान से पहले देर रात करीब 2 बजे भगदड़ मच गई।

इसमें कुछ लोगों के मरने की बात कही जा रही है। एक प्रत्यक्षदर्शी के मुताबिक भगदड़ मचते ही लोग दौड़ने लगे। अभी प्रशासन की ओर से कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है।

इसरो ने लगाया शतक

श्रीहरिकोटा, (आंध्र प्रदेश),(एजेंसी)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के लिए शार रेंज से एक रिकॉर्ड और ऐतिहासिक 100वें लॉन्च मिशन में, स्वदेशी क्रायोजेनिक तीसरे चरण के साथ जीएसएलवी–एफ15 रॉकेट ने एनवीएस–02 नेविगेशन उपग्रह को बुधवार की सुबह वांछित परिक्रमा सफलतापूर्वक 'इंजेक्ट' किया। भारी प्रक्षेपण यान ने 27 घंटे की सहज उलटी गिनती के बाद 19 मिनट की उड़ान अवधि के बाद दूसरे लॉन्च पैड से शानदार ढंग से उड़ान भरी, 2,250 किलोग्राम उपग्रह को कक्षा में स्थापित किया। इसरो के अध्यक्ष डॉ. वी. नारायणन ने मिशन नियंत्रण केंद्र के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए मुस्कुराते हुए कहा, "जीएसएलवी–एफ15ध्एनवीएस02 मिशन पूरा हुआ।" वैज्ञानिकों ने कहा कि यह 1979 में एसएलवी से शुरू हुआ एसएचएआर से इसरो का 100वां मिशन है। सर्द मौसम का सामना करते हुए और राष्ट्रीय ध्वज लहराते हुए सैकड़ों दर्शक प्रक्षेपण को देखने के लिए दर्शक दीर्घा में एकत्र हुए।

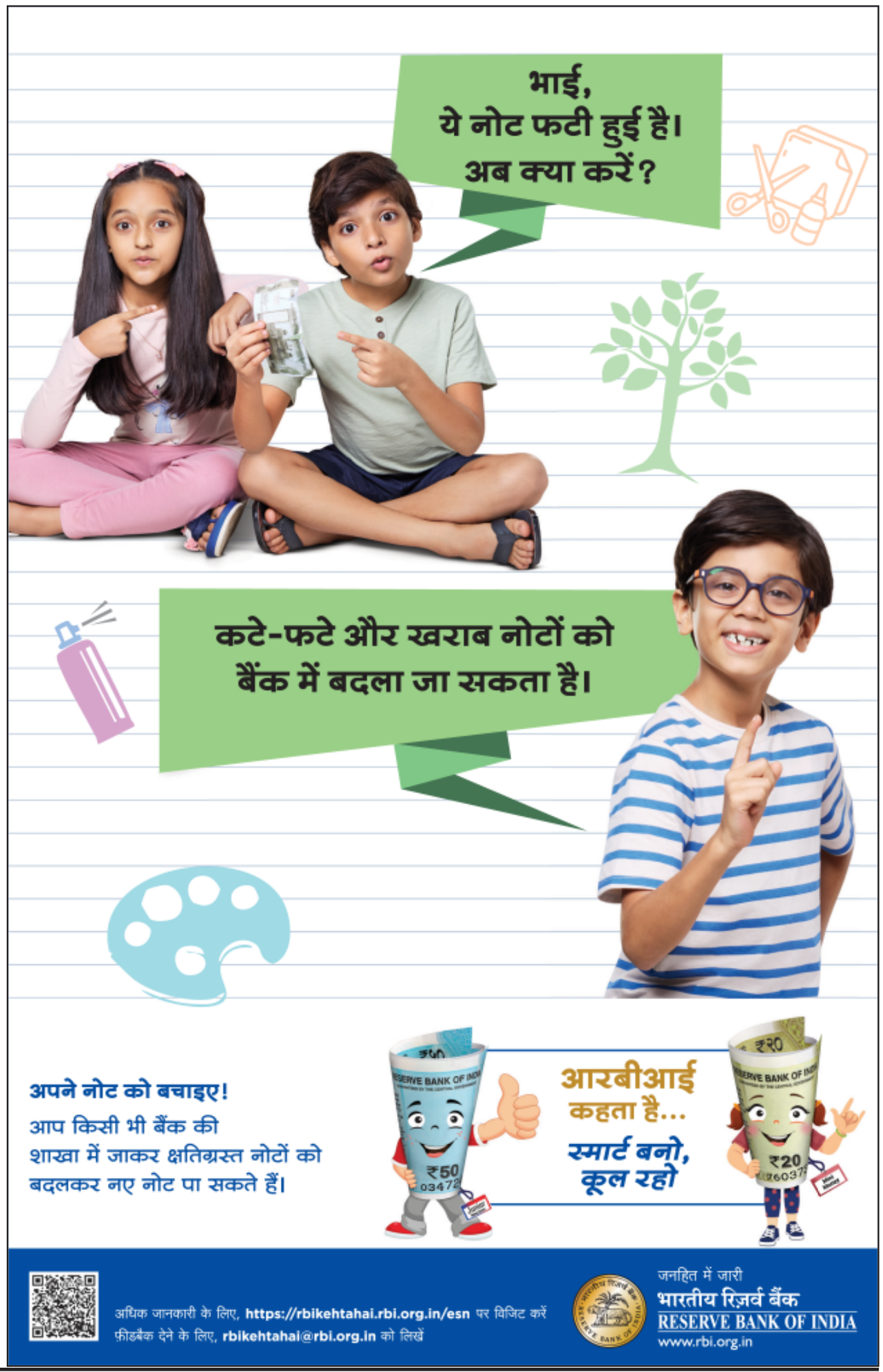

सम्पादकीय

महू से संविधान–रक्षा की निर्णायक लड़ाई

मध्यप्रदेश के इंदौर के निकट स्थित बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जन्मस्थली महू से कांग्रेस ने संविधान की रक्षा की निर्णायक लड़ाई छेड़ दी, जब सोमवार को आयोजित एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने देश की मौजूदा राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों का व्यापक चित्रण करते हुए चेताया कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार दलितों, आदिवासियों, एवं कमजोर वर्गों के हक को मार रही है। वंचितों के लिये संविधान के महत्व को समझाते हुए राहुल ने बतलाया कि जिस दिन देश का संविधान खत्म हो जायेगा उस दिन इन वर्गों के लिये कुछ भी नहीं बचेगा। वैसे तो कांग्रेस ने सामाजिक न्याय की लड़ाई पिछले कुछ समय से कई–कई मोर्चों पर और अनेक स्वरूपों में छेड़ रखी है, लेकिन महू की सभा में राहुल ने जिस स्पष्टता व व्यापकता से संविधान की अहमियत प्रतिपादित की तथा उस पर छाये संकटों का ब्यौरा दिया, उसके चलते उम्मीद की जा सकती है कि कांग्रेस का संदेश इन वर्गों तक ही नहीं वरन समग्र समाज तथा देश को समझ में आयेगा कि किस प्रकार से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी संविधान को समाप्त कर लोक अधिकारों का सम्पूर्ण खात्मा करना चाहती है। इस सभा में जय बापू जय भीम जय संविधान का जो नारा दिया गया है वह कोई रातों–रात गढ़ा गया अथवा एकाएक सोची गयी थीम न होकर एक वैचारिक प्रक्रिया से निकली हुई यह सोद्देश्य लड़ाई है। याद हो कि राहुल ने 7 सितम्बर, 2022 को कन्याकुमारी से लगभग चार हजार किलोमीटर का दक्षिण से उत्तर की ओर पैदल मार्च किया था और जिसका समापन कश्मीर के श्रीनगर में 30 जनवरी, 2023 को हुआ था, उसे श्भारत जोड़ो यात्राश का नाम दिया गया था। वह देश में नफरत के खिलाफ मोहब्बत की यात्रा थी। साम्प्रदायिक सौहार्द्र के लिये निकली उस यात्रा के दौरान अनेक मुद्दों पर राहुल चर्चा करते दिखे जिसमें यह तथ्य सामने आया कि भाजपा एवं उसकी मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक खास एजेंडे के तहत देश में ऐसा माहौल बना रही है। एक ओर तो वह हिन्दू–मुस्लिमों को लड़ा रही है तो वहीं वह दूसरी ओर अगड़ों–पिछड़ों के बीच खाई को चौड़ा करने के बड़े षडयंत्र और कुचक्र रच रही है। जैसे–जैसे यह यात्रा बढ़ी तो लोगों को यह बात स्पष्ट होने लगी कि इसके पीछे का असली खेल देश के सारे संसाधन मुट्ठी भर कारोबारियों को सौंप देने का है। लाभकारी सार्वजनिक उपक्रम दो बड़े व्यवसायियों के हाथों में देने के दुष्परिणाम ये हैं कि देश में गरीबी, बेकारी और बेहाली छाई है। शिक्षा व स्वास्थ्य सहित सारे जनहित के कार्य ठप पड़े हैं और धर्म व जाति के जरिये भाजपा केवल ध्रुवीकरण में व्यस्त है। विपक्षी दलों सहित सभी तरह की विरोध व असहमतियों की आवाजों को सरकार दबा रही है। आर्थिक शक्तियों पर आधिपत्य करने के लिये भाजपा व उसकी केन्द्र सरकार राजनीतिक ताकत को अपनी मुट्ठी में ले चुकी है। यह कार्य आसानी से करने के लिये ही उसने सामाजिक ताने–बाने को ध्वस्त कर दिया है। इसलिये जब राहुल गांधी ने उस यात्रा का सीक्वल हाई ब्रीड (पैदल व वाहन के जरिये) के रूप में मणिपुर से 14 जनवरी, 2024 से प्रारम्भ कर दो माह बाद मुम्बई में समाप्त किया, तो उसे भारत जोड़ो न्याय यात्रा नाम दिया गया जो समय की आवश्यकता एवं समय के अनुरूप ही था। सामाजिक सौहार्द्र की लड़ाई को कांग्रेस ने केवल सामाजिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक व आर्थिक न्याय की लड़ाई के रूप में भी बड़ा विस्तार दिया। लोकसभा के लिये पिछले साल के मध्य में हुए चुनाव में भाजपा ने जो 400 पार का नारा दिया था उससे एक तरह से संविधान को पहला बड़ा और साफ खतरा उभरकर आया। वैसे तो पहले से यह दिख रहा था कि भाजपा व संघ की पसंद भारत का संविधान नहीं वरन मध्ययुगीन संहिता मनुस्मृति है। कई मौकों पर वह संविधान को कोसती आई थी। उसके कई नेता तथा चुनावी प्रत्याशी उसे बदलने की मंशा जतला चुके थे। वे यह कहकर वोट मांग रहे थे कि मोदी को 400 सीटें चाहिये क्योंकि संविधान को बदलना है। इस बात को कांग्रेस व उसके नेतृत्व में बने प्रतिपक्षी गठबन्धन इंडिया के साथ जनता ने भांप लिया जिसके कारण भाजपा की सीटें इतनी घट गयीं कि मोदी को तेलुगु देसम पार्टी व जनता दल यूनाइटेड के समर्थन से सरकार बनानी पड़ी। वैसे तो आरोप हैं कि तकरीबन 80 सीटों पर ईवीएम के जरिये हेर–फेर हुआ है। बहरहाल, भाजपा के मंसूबे ध्वस्त होने का परिणाम यह हुआय और भाजपा को संविधान की ताकत का एहसास भी हो गया कि उसे संविधान के आगे सिर झुकाना पड़ा। फिर भी, भाजपा–संघ की संविधान के प्रति वास्तविक श्रद्धा तो कभी थी ही नहींय जो थी वह अस्थायी व कृत्रिम थी। अवसर आने पर उसकी कलई खुलती गयी। राज्यसभा में केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा विपक्षी सदस्यों पर यह कहकर तंज कसना कि, अंबेडकर का नाम लेना फैशन हो गया है..., यह बतलाने के लिये काफी था कि भाजपा व संघ संविधान निर्माता का कितना सम्मान करते हैं। दूसरी तरफ मोहन भागवत ने हाल ही में यह बयान दिया था कि च्च्देश को असली आजादी 22 जनवरी, 2024 को मिली है।श उनका आशय अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से था। यह बतलाता है कि उनके लिये 1947 में प्राप्त स्वतंत्रता और संविधान दोनों ही अमान्य हैं। वैसे भी दोनों संगठनों के लिये महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू के अलावा अंबेडकर हमेशा निशाने पर रहे हैं। हाल ही में बेलगावी (कर्नाटक) में आयोजित अपने अधिवेशन में कांग्रेस ने संविधान की रक्षा का जो संघर्ष छेड़ा है, वह महू में और आगे बढ़ता हुआ नजर आया है।

अमेरिकी कहलाने की यह कैसी जिद जो खड़े करती है गंभीर सवाल

❍ डोनाल्ड ट्रंप के जन्म संबंधी नागरिकता के अधिकार की समाप्ति के आदेश के बाद भारतीय दंपतियों में समय–सीमा खत्म होने से पहले अपने बच्चे का समय पूर्व अमेरिका में ही जन्म कराने की होड़ लगने की खबरें हैरत में डालने वाली हैं और गंभीर सवाल भी खड़े करती हैं।

पत्रलेखा चटर्जी

यह अविश्वसनीय लगता है कि कोई भी परिवार महज एक समृद्ध देश में रहने के लिए समय से पहले अपने बच्चों के जन्म का जोखिम उठाएगा, जिसका मतलब है कि अविकसित फेफड़े, जन्म के समय कम वजन और न्यूरोलॉजिकल जटिलताओं वाला बच्चा पैदा करना। लेकिन भारतीय मीडिया में जिस तरह की खबरें आ रही हैं, यदि वे सही हैं, तो ऐसा ही हो रहा है। अमेरिका का निवासी बनने या वहां बसे रहने के लिए 'जन्म संबंधी अधिकार प्रतिबंध की समय–सीमा' से निपटने के लिए सी–सेक्शन डिलिवरी (ऑपरेशन द्वारा प्रसव) कराने के आवेदनों में अचानक वृद्धि हो गई है। खबरों के मुताबिक, अमेरिका के राष्ट्रपति पद का कार्यभार संभालते ही डोनाल्ड ट्रंप द्वारा जारी किए गए प्रमुख कार्यकारी आदेशों, जिनमें जन्म संबंधी नागरिकता के अधिकार की समाप्ति का भी आदेश है, की समय–सीमा 19 फरवरी निर्धारित की गई है। इसलिए भारतीय दंपती 20 फरवरी से पहले सी–सेक्शन डिलिवरी कराने के लिए डॉक्टरों से संपर्क साध रहे हैं और प्रसूति अस्पतालों में कतार में लगे हैं। आदेश के अनुसार, 19 फरवरी के बाद गैर अमेरिकी नागरिक जोड़े से पैदा होने वाले बच्चे अब स्वतरू ही अमेरिका के नागरिक नहीं रहेंगे।

फिलहाल, यह आदेश कानूनी बाधाओं में फंस गया है। आलेख लिखते समय, अमेरिका के एक संघीय न्यायाधीश ने ट्रंप के जन्मसिद्ध नागरिकता के अधिकार को फिर से परिभाषित करने वाले कार्यकारी आदेश पर अस्थायी रूप से रोक लगा दी है। साथ ही ट्रंप के आदेश को 'सरासर असांविधानिक' भी कहा है। आदेश पर लगाई गई अस्थायी रोक अमेरिका में रहने वाले अनेक लोगों के लिए बहुत बड़ी राहत लेकर आई है। लेकिन इसे स्वीकार कर पाना अब भी बहुत मुश्किल है कि अमेरिका की स्थायी नागरिकता हासिल करने के लिए, डॉक्टरों के चेतावनी देने के बावजूद, अनेक भारतीय समय से पहले जन्म का विकल्प चुनकर जच्चा और बच्चा, दोनों की जिंदगी को मुसीबत में डालने के लिए तैयार हैं। यह तब और मुश्किल हो जाता है, जब किसी को पता चलता है कि ये लोग न तो गरीब, न भूखे और न ही अशिक्षित हैं।

यदि नया जन्मसिद्ध नागरिकता आदेश मौजूदा कानूनी चुनौती पर काबू पा लेता है, तो इसका अमेरिका में अस्थायी एच–1बी और एल1 वीजा पर रहने वाले हजारों भारतीयों पर संभावित असर पड़ सकता है। कई लोग अमेरिका में स्थायी निवास देने वाले ग्रीन कार्ड की कतार में भी हैं। माना जाता है कि कुछ माता–पिता उम्मीद करते हैं कि उनके बच्चों की अमेरिकी नागरिकता उनके खुद के अमेरिका में रहने का मार्ग प्रशस्त करती है। क्या यह निराशा, हताशा, लालच या इन सभी के संयोजन का संकेत नहीं है, खासकर तब जब अमेरिका में अवैध ढंग से रह रहने वाले हजारों भारतीयों की रिपोर्ट भी यही इशारा कर रही है? भारत सरकार अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे सभी भारतीय नागरिकों की पहचान करने और उनकी वतन वापसी के लिए ट्रंप प्रशासन के साथ सहयोग करने की योजना बना रही है। खबरों के मुताबिक, भारत और अमेरिका ने अवैध रूप से अमेरिका में रह रहे करीब 18,000 भारतीय नागरिकों की पहचान की है। भारत इन लोगों के दस्तावेजों का सत्यापन करेगा। भारत सरकार की ओर से कहा गया है कि दस्तावेज सत्यापन में जो लोग भारतीय नागरिक पाए जाएंगे, उन्हें वापस लाया जाएगा। जाहिर है, आने वाले महीनों में निर्वासन की संख्या तेजी से बढ़ सकती है, क्योंकि अमेरिका में अवैध आप्रवासियों के अधिक मामले सामने आ रहे हैं। अमेरिका स्थित प्यू रिसर्च सेंटर के अनुसार, अमेरिका में लगभग सवा सात लाख आप्रवासी भारतीय बिना वैध दस्तावेजों के रह रहे हैं, जो उन्हें मेक्सिको और अल सल्वाडोर के बाद तीसरा बड़ा समूह बनाते हैं। भारत के लिए यह विरोधाभासी स्थिति है। पड़ोसी देशों से अवैध प्रवास एक अत्यधिक भावनात्मक मुद्दा है, जिसका देश के भीतर राजनीतिक प्रभाव पड़ता है। हैरत की बात है कि जो भारतीय अमीर देशों में जाने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालते हैं, वे अमूमन भारत के सबसे गरीब राज्यों के निवासी न होकर पंजाब, हरियाणा और गुजरात जैसे देश के कुछ सबसे अमीर राज्यों से आते हैं। कई लोग तो अमेरिका पहुंच ही नहीं पाते हैं। वे या तो रास्ते में ही बर्फ में जमकर मर जाते हैं, पानी में डूब जाते हैं या फिर तस्करों का शिकार बन जाते हैं।

दिसंबर 2023 में मानव तस्करी की जांच के लिए संयुक्त अरब अमीरात से निकारागुआ जाने वाले एक चार्टर्ड विमान को फ्रांस में रोक दिया गया था। 303 भारतीयों को ले जा रही फ्लाइट को आखिरकार मुंबई लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा। भारतीय मीडिया के अनुसार, निकारागुआ जाने वाले विमान में सवार 66 लोग, जिन्हें मानव तस्करी के संदेह में फ्रांस से लौटाया गया था, गुजरात के रहने वाले थे और अवैध रूप से अमेरिका जाने के लिए आव्रजन एजेंटों को 60 से 80 लाख रुपये देने पर सहमत हुए थे। 2024 में अमेरिका ने 2022 में एक बर्फीले तूफान के दौरान कनाडा–अमेरिका सीमा पार करने का प्रयास करते समय एक भारतीय प्रवासी परिवार की मौत के बाद मानव तस्करी से संबंधित आरोपों में एक भारतीय नागरिक सहित दो लोगों को दोषी ठहराया था। हालांकि, सामान्य रूप से देखें तो, अमीर देशों की ओर भागने वाले भारतीय दरअसल गरीबी से भागने की आकांक्षा का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्हें बेहतर रोजगार की तलाश होती है, वह चाहेघ्जहां भी मिले। हताशा, बुनियादी मानवता और अपने बच्चे के स्वास्थ्य के प्रति पूर्ण उपेक्षा की ये छवियां निराश करने वाली हैं। भारत को अपने भीतर झांकना चाहिए और अपने लोगों को अवसर प्रदान करने चाहिए, ताकि प्रवासन एक विकल्प हो, न कि घोर हताशा में उठाया गया कदम। अमीर देशों के अधिक से अधिक संरक्षणवादी होने से अब कोई भी नौकरी या विदेश में स्थायी निवास पर भरोसा नहीं कर सकता है। हमें युवा भारतीयोंघ्को अधिक उम्मीदें और वास्तविक विकल्प प्रदान करने होंगे। हम अपनी युवा आबादी (औसत उम्र–28) और 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के बारे में अंतहीन बात कर सकते हैं। इसकी ताकत से भी कोई इन्कार नहीं है, लेकिन इसका असल फायदा तभी हो सकता है, जब कुछ चुनौतियों को समझें और उनका समाधान भी ढूंढें।

खुद को खोजने की राह परःहमसे उम्मीदें लगाए बैठा है पश्चिम, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भविष्य की तरफ बढ़ रहा भारत

दीपक कुमार शर्मा

पिछले कुछ वर्षों से यह महसूस होता है कि भारत, जिसे कभी पश्चिम में सपेरों का देश माना जाता था, को लेकर पूरी दुनिया का नजरिया बदला है। आज अगर हर कोई भारत की बात कर रहा है, तो आखिर इसकी वजह क्या है? दरअसल, पिछले एक दशक में देश को जो नेतृत्व मिला, उसका सबसे उल्लेखनीय योगदान भारत के सांस्कृतिक आख्यान को नए सिरे से परिभाषित करना रहा है, जिसमें गर्व और वैश्विक प्रासंगिकता की नई भावना का संचार किया गया है।

स्वतंत्रता के बाद के दौर में, भारत औपनिवेशिक खुमार से जूझ रहा था, जिसे 'भूरा साहब' की संस्कृति ने और भी तीव्र कर दिया, जिसने शिक्षा प्रणाली और सार्वजनिक विमर्श को प्रभावित किया। हिंदू धर्म से जुड़ी सभी चीजों को पिछड़ा और प्रतिगामी माना जाता था, और प्राचीन मान्यताओं के खिलाफ दौड़ को सच्चा विकास माना जाता था। उन स्थितियों में एक राष्ट्र अपने गौरवशाली अतीत से आगे निकलने की कोशिश कर रहा था, जिसे सदियों से बदनाम और अपमानित किया गया था। हम सभी उस दौड़ में शामिल थे, बिना यह जाने कि हमने अपने तरीके से, उन सभी चीजों को त्यागने का प्रयास किया, जो हमें भारतीय बनाती हैं। और, यह मनोवैज्ञानिक फिसलन बचपन से ही शुरू हो गई थी। हमारी स्कूली पाठ्यपुस्तकें विदेशी आक्रमणकारियों की महिमामंडित किंवदंतियों और अंग्रेजों के औपनिवेशिक 'योगदान' से भरी हुई थीं। इसमें विदेशियों के कथित

'सभ्यतापूर्ण' हस्तक्षेप से बहुत पहले भारत की समृद्ध परंपरा और उपलब्धियों को कम करके आंका गया। प्राचीन ज्ञान प्रणालियों और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों की महिमा, जिसका गुणगान चीनी विद्वानों ने हजारों साल पहले अपने लेखों में किया था, खो गई और हमें बौद्धिक मान्यता के लिए हार्वर्ड की ओर देखना पड़ा। हमने आजादी से कहीं ज्यादा अपनी पहचान खो दी। आजादी के बाद के पहले ओबीसी प्रधानमंत्री मोदी को निरंतर हाशिये पर रहने और उत्पीड़न के परिणामस्वरूप आत्मसम्मान की कमी का गहरा एहसास है, जो दरअसल, सदियों से चला आ रहा एक पीढ़ीगत घाव भी है। यह केवल गर्व का सवाल नहीं था, जिसे आसानी से गढ़ा जा सकता है, यह सांस्कृतिक आत्म की गहरी समझ के साथ एक समझौता था, जो राष्ट्रीय अखंडता और पहचान से अभिन्न है।

जैसा कि कहा जाता है, 'यदि आप नहीं जानते कि आप कहां से आए हैं, तो आप कभी नहीं जान पाएंगे कि आप कहां जा रहे हैं।' और भारत जिस रास्ते पर चल रहा था, लेकिन पहले उसे भारत की खोज करनी थी। उसे न केवल देश के बुनियादी ढांचे का, बल्कि सांस्कृतिक मानसिकता का भी विकास करना था। अतीत से प्रस्थान शुरू से ही स्पष्ट था, जब प्रधानमंत्री मोदी ने काशी में गंगा आरती की। जाहिर है, आलोचना तो अपेक्षित थी ही, लेकिन वह अपनी आस्था के प्रति अडिग रहे। उन्होंने हिंदू होने को छुपाने वाले पाखंड और अपमान की चादर को उतार फेंका। उनकी तुलना में पंडित नेहरू अपनी आस्था के प्रति उदासीन थे और काफी हद तक पश्चिमीकरण की ओर झुकाव रखते थे। वह संस्कृति को प्रगति में बाधा मानते थे। मोदी के साथ, भारत अपनी उत्तर–औपनिवेशिक पहचान और हमारी प्राचीन सभ्यता और ज्ञान की आत्महीनता के पन्ने पलट रहा था। हमारी प्राचीन संस्कृति को अब एक योगदानकर्ता के रूप में देखा जाना था, जिसे स्वीकार किया जाना था, न कि मिटाया जाना। यह कई मायनों में मान्यता और स्वीकृति के लिए पुराने आकाओं पर निर्भरता के बंधनों से मुक्ति का दौर था। दस साल बाद, इस स्थिर मार्ग ने भारत को ग्लोबल साउथ की एक प्रमुख आवाज बना दिया है, जिसमें भारत के प्रधानमंत्री को कई उत्तर–औपनिवेशिक देशों के लिए मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है। हमारी भूमि और मानस पर आक्रमण के कारण जब हमारी कई प्राचीन ज्ञान प्रणालियां लुप्त हो गईं, तब प्रधानमंत्री मोदी ने संस्कृत और पाली जैसी प्राचीन भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए जोरदार प्रयास किया, ताकि डिजिटलीकरण, अनुवाद और अध्ययन की प्रक्रिया।

गणतंत्र 76ःकुछ इशारे!

बेढब तो है, पर हैरान नहीं करता है कि गणतंत्र की पूर्व–संध्या पर अपने परंपरागत संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मू ने श्एक देश, एक चुनावश का जी भरकर गुणगान किया। उन्होंने इसे अपनी सरकार का श्साहसपूर्ण दूरदर्शिताश का प्रयास ही करार नहीं दिया, यह दावा भी किया कि इससे सुशासन को नये आयाम दिए जा सकते हैं। राष्ट्रपति ने इस दूरदर्शी साहस के लाभों का बखान करते हुए कहा कि एक देश एक चुनाव की व्यवस्था से शासन में निरंतरता को बढ़ावा मिल सकता है, नीति निर्धारण से जुड़ी निष्क्रियता समाप्त की जा सकती है, संसाधनों के अन्यत्र खर्च हो जाने की संभावना कम हो सकती है तथा वित्तीय बोझ को कम किया जा सकता है। इसके अलावा जनहित में अनेक अन्य लाभ हो सकते हैं। यहां हम एक देश, एक चुनावश के प्रोजेक्ट के गुण–दोष की बात नहीं कर रहे हैं। यह दूसरी बात है कि राष्ट्रपति के इस प्रोजेक्ट के गुणों के बखान में एक भी ऐसे तर्क का न होना थोड़ा निराश तो जरूर करता है, जो तर्क इस नारे के उछाले जाने के बाद से इसके पक्ष में पहले ही नहीं सुना जा चुका हो। तमाम चुनाव एक साथ कराए जाने से संसाधनों की बचत, नीति निर्धारण में चुनाव संबंधी पाबंदियों के चलते पड़ने वाली बाधाओं से उबरना, शासन में निरंतरता में बढ़ोतरी, आदि सब वही तर्क हैं जो बिना किसी ठोस साक्ष्य के और वास्तव में बिना किसी ठोस तर्क के भी, इतनी बार दोहराए गए हैं कि सुन–सुनकर कान पक गए हैं। फिर भी राष्ट्रपति को अपनी ओर से कुछ नया तर्क जोड़ेना ही चाहिए, इस तरह की मांग को तो शायद ज्यादती भी कहा जा सकता है, हालांकि ऐसा होना इस नारे के पक्ष में तर्कों के सतहीपन को जरूर दिखाता है। खैर! असली बात यह है कि हमारी संवैधानिक व्यवस्था में राष्ट्रपति का पद, श्अपनी सरकारश के श्परामर्शश से जिस तरह बंधा हुआ है, उसे देखते हुए राष्ट्रपति के अपनी सरकार के किसी फैसले का बचाव करने को किसी भी तरह से गलत नहीं कहा जा सकता है। जहां तक एक देश एक चुनाव के प्रोजेक्ट का सवाल है, उस पर राष्ट्रपति मुर्मू की सरकार अंततः अपने अनुमोदन की मोहर ही नहीं लगा चुकी है, वह दो विधेयकों के रूप में इससे संबंधित संशोधन प्रस्तावों को पिछले ही सत्र में संसद में पेश भी कर चुकी है। और इन विधेयकों को और विचार के लिए, संयुक्त संसदीय समिति के सामने भेजा भी जा चुका है। फिर भी, राष्ट्रपति द्वारा एक देश एक चुनाव का जोर–शोर से ढोल पीटे जाने में कानूनी व्यवस्थाओं के तकनीकी पहलू से चाहे कुछ भी गलत नहीं हो, फिर भी संवैधानिक नैतिकता के पहलू से इसके समस्यापूर्ण होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। अव्वल तो यह सरकार के एक ऐसे फैसले का राष्ट्रपति द्वारा ढोल पीटे जाने का मामला है, जिस पर देश तथा जनमत के पूरी तरह से बंटे होने से किसी भी तरह से इंकार नहीं किया जा सकता है। पूर्व–राष्ट्रपति की अध्यक्षता में गठित उच्चाधिकार–प्राप्त समिति के अंततरू अपनी सिफारिशें देने से पहले उसे उक्त प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष में देश की जितनी राजनीतिक पार्टियों की राय मिली थी, उस पर एक नजर भर डालने से ही, इस मुद्दे पर जनमत के गंभीर रूप से विभाजित होने का सच सामने आ जाता है। वास्तव में यह सच भी किसी से छुपा हुआ नहीं है कि इस परियोजना के पीछे मुख्य संचालक, सत्ताधारी भाजपा ही है, हालांकि उसके लिए अपने सहयोगी दलों को घेर–बटोरकर इस प्रोजेक्ट के पक्ष में करना भी मुश्किल नहीं हुआ है। सच तो यह है कि साथ–साथ चुनाव संबंधी विधेयकों का विचार के लिए संयुक्त संसदीय समिति को भेजा जाना भी, इस मामले पर विचारों की व्यापक भिन्नता को ही दिखाता है। यह संयोग ही नहीं है कि मोदी के तीसरे कार्यकाल में यह दूसरा ही मौका है, जब किसी विधेयक को विस्तृत विचार–विमर्श के लिए संयुक्त संसदीय समिति को भेजा गया है। इस सिलसिले में यह याद दिलाना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि इस प्रोजेक्ट को अमल में लाने के लिए किए प्रस्तावित संशोधनों में, कई संविधान संशोधन भी शामिल हैं। दूसरे शब्दों में यह ऐसा प्रस्ताव है, जो वर्तमान रूप में संविधान की व्यवस्थाओं के खिलाफ जाता है। ऐसे मामले में राष्ट्रपति के सरकार के फैसले के अनुमोदन के लिए दौड़ पड़ने की जल्दबाजी कम से कम बेढब तो जरूर ही कही जाएगी। हालांकि, इस संभावना को काल्पनिक ही कहा जाएगा, फिर भी बहस के लिए अगर हम यह मान लें कि संसद के सामने विचाराधीन संशोधन, विफल हो जाते हैं, तो एक देश एक चुनाव की राष्ट्रपति की इस जोरदार पैरवी का क्या होगा? याद रहे कि इस पैकेज में शामिल संविधान संशोधन के प्रस्तावों का, संसद के दोनों सदनों में दो–तिहाई बहुमत से पारित होना, वैसे भी बहुत मुश्किल है। साफ है कि राष्ट्रपति हर एक लिहाज समस्यापूर्ण परियोजना के साथ अपना नाम जोड़ने की हड़बड़ी दिखा रही थीं। वह भी तब जबकि यह गणतंत्र दिवस की पूर्व–संध्या में राष्ट्रपति के परंपरागत किंतु समारोही संबोधन का मामला था। कम से कम ऐसे संबोधन में राष्ट्रपति के अक्षरशः अपनी सरकार के लिखे को पढ़ने की मजबूरी नहीं होनी चाहिए। कम से कम नकारात्मक विवेक का उपयोग कर, राष्ट्रपति सरकार के विशेष रूप से ऐसे विवादास्पद तथा संसदीय प्रक्रियाधीन प्रोजेक्ट का ढोल पीटने से तो खुद को अलग रख ही सकती थीं। बेशक, राष्ट्रपति के इस अभिभाषण में एक यही चीज विवादास्पद नहीं थी। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने अपनी सरकार की गरीबी तथा भुखमरी से देश और लोगों को उबारने की श्उपलब्धियोंश के अतिरंजित दावे तो किए ही, इसके साथ ही उन्होंने तथाकथित औपनिवेशिक मानसिकता के अवशेषों से उबरने के प्रयास के रूप में तीन नयी फौजदारी संहिताओं का भी जिक्र किया। और इस सब के ऊपर से कुंभ के आयोजन के बहाने से इसका भी दावा किया कि श्हमारी सांस्कृतिक विरासत के साथ हमारा जुड़ाव और अधिक गहरा हुआ है। राष्ट्रपति के इन सभी दावों पर विवाद हो सकता है। लेकिन, गणतंत्र दिवस के समारोही मौके पर कम से कम श्एक देश, एक चुनावश के कर्कश विवाद में न पड़ने का विवेक राष्ट्रपति को और उन्हें इस विवाद में न धकेलने का विवेक मोदी सरकार को दिखाना चाहिए था। लेकिन, दोनों ने ही ऐसे विवेक का प्रदर्शन नहीं किया, जो अपने 75 वर्ष पूरे करने के मौके पर भारतीय गणराज्य की दशा–दिशा की ओर एक कठोर इशारा है। वास्तव में ऐसा ही एक और इशारा खुद भारतीय गणतंत्र के 75साल पूरे होने को लेकर किया गया है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने को लेकर जैसा समारोही जोश शासन में दिखाई दिया था, उसका सौवां हिस्सा भी गणतंत्र के 75 वर्ष पूरे होने को लेकर नहीं दिखाई दिया। इस मौके पर हर साल की तरह, गणतंत्र दिवस परेड का आयोजन ही पर्याप्त समझा गया। वास्तव में गणतंत्र दिवस को काफी हद तक, मोदी के राज में शुरू किए गए 25 नवंबर की संविधान दिवस ईवेंट से प्रतिस्थापित किया चुका है।

इसीलिए, संविधान के स्वीकार किए जाने के (लागू होने के नहीं) 75 साल पूरे होने का तो संसद के विशेष सत्र से और उसके बाद संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान के 75 वर्ष पर विशेष बहस से जोर–शोर से पालन किया गया, लेकिन गणतंत्र के 75 साल होने का विशेष रूप से पालन करने की जरूरत महसूस नहीं की गयी। लेकिन क्यों? वर्तमान सत्ताधारियों को गणतंत्र दिवस से समस्या यह भी लगती है कि स्वतंत्र भारत के संविधान के लागू किए जाने के लिए, 26 जनवरी का ही दिन इसलिए चुना गया था कि राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के पूर्ण स्वराज की मांग स्वीकार करने के बाद, 26 जनवरी का ही दिन पूर्ण स्वराज दिवस के रूप में मनाने के लिए चुना गया था और उसके बाद 1947 में 15 अगस्त को भारत को स्वतंत्रता मिलने तक, हर साल 26 जनवरी का ही दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा था। दूसरी ओर, वर्तमान सत्ताधारियों के पुरखा, आरएसएस और हिंदू महासभा ही इस स्वतंत्रता दिवस के पालन से दूर ही रहे थे। स्वतंत्रता आंदोलन के बीच से निकले ऐसे दिन का पालन, वर्तमान सत्ताधारियों को पसंद नहीं है। इसीलिए, गणतंत्र दिवस के मुकाबले संविधान दिवस को खड़ा करने की कोशिशें की जा रही हैं, हालांकि ये कोशिशें अभी तक आंशिक रूप से ही सफल हुई हैं।

मीलों का रास्ता और करोड़ों की भीड़, आपकी कुंभ यात्रा में अयोध्या-काशी भी तो

वाराणसी। महाकुंभ में उमड़े श्रद्धा के सैलाब का दबाव अब काशी और अयोध्या की गलियां भी महसूस कर रही हैं। अयोध्या की बात की जाए तो मंगलवार को भी श्रद्धालुओं का रेला उमड़ा है। मंगलवार होने के चलते हनुमानगढ़ी में दो किलोमीटर लंबी लाइन लगी हुई है। कुछ इसी तरह का दृश्य राम जन्मभूमि मंदिर की ओर जाने वाली गलियों का भी है। सोमवार को रामलला के दरबार में 3.55 लाख भक्तों ने हाजिरी लगाई। दो दिनों के भीतर रामलला के दरबार में छह लाख से अधिक भक्त पहुंच चुके हैं। 29 जनवरी को मौनी अमावस्या का मुख्य महापर्व है। अमावस्या आज देर शाम से ही लग रही है पर उदया तिथि में यह स्नान 29 को भोर से पूरे दिन चलेगा। इसके लिए भक्तों का रेला है। इस बीच मंगलवार सुबह से ही 10 लाख से ज्यादा भक्त सरयू स्नान कर नागेश्वरनाथ महादेव का अभिषेक करने के बाद हनुमानगढ़ी दर्शन के लिए पहुंचे रहे हैं। प्रयागराज से अयोध्या पहुंचने के लिए आपको 180 किलो मीटर का सफर तय करना पड़ेगा। भीड़ बहुत अधिक होने के कारण आप कब स्टेशन पहुंचगे और कब अयोध्या, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है।

काशी का तो ऐसा हाल
भगवान विश्वनाथ को भी नहीं मिल रहा सोने का वक्त

महाकुंभ की भीड़ से काशी हाउसफुल हो गया है। बाबा के दर्शन के लिए घंटों लोग लाइन में खड़े होकर इंतजार कर रहे। वहीं सोमवार को एक दिन में 11 लाख भक्त बाबा के धाम में पहुंचे। सामान्य दिनों में पहली बार रात एक बजे तक विश्वनाथ मंदिर को खोला गया। इससे पहले महाशिवरात्रि और सावन के महीने में देर रात तक मंदिर खुलता था। भीड़ को देखते हुए लगातार 22 घंटे तक दर्शन के लिए मंदिर को खुला रखा गया। रात 2.15 बजे मंदिर फिर से खुला। 22 घंटे लगातार भक्तों ने दर्शन–पूजन किया। भोर में 2रू45 बजे मंगला आरती शुरू हुई। मंगला आरती के बाद दर्शन पूजन का सिलसिला फिर शुरू हो गया। मंगलवार को भी देर रात तक दर्शन कराए जाएंगे। इससे पहले सोमवार को दोपहर में दशाश्वमेध घाट से गोदौलिया रूट को पूरी तरह से बंद कर दिया गया था। ऐसा पहली बार हुआ।

पुलिस बल और रेलवे पर भारी दबाव

प्रयागराज में 1–2 नहीं बल्कि पूरे 8 प्रमुख रेलवे स्टेशन हैं। इस सूची में प्रयागराज जंक्शन के अलावा फाफामऊ, प्रयागराज संगम, झूंसी, प्रयागराज छिंवकी, नैनी, प्रयागराज रामबाग और सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन का नाम शामिल है। इसके बाद भी स्टेशन पर जो भीड़ का दबाव इतना अधिक है कि आपको बहुत सावधानी रखने के आवश्यकता होगी।

स्टेशन पर पहली बार ऐसी व्यवस्था भी की गई है कि अगर वाराणसी और अयोध्या जाने वालों की टिकट संख्या बहुत अधिक हो गई है तो, तुरंत एक नई गाड़ी इन दो शहरों के लिए भेज दी जा रही है और इसकी जानकारी स्टेशन पर घोषणा के माध्यम से दी जा रही है। दिलचस्प बात तो यह है कि पहली बार ऐसी घोषणाएं भी सुनाई दे रही हैं कि यह ट्रेन कहीं नहीं जा रही है, कृपया इसमें न बैठें।

गंगाजल में इस दिन सबसे ज्यादा जीवाणु... बनते हैं इम्यूनिटी बूस्टर, जीवन भर होगा बचाव

वाराणसी। महाकुंभ में मौनी अमावस्या का स्नान, पौराणिक ही नहीं बल्कि मेडिकल साइंस की नजर में भी बहुत बड़ा महत्व रखता है। इस दिन गंगा की एक डुबकी कुछ देर की ही ताजगी देगी, लेकिन जीवन भर काम आने वाली इम्यूनिटी से भर देगी। खतरनाक जीवाणुओं से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति अपने अंदर होगी।

बीएचयू, मोती लाल नेहरू प्रयागराज और केजीएमयू लखनऊ समेत देश भर के 31 वैज्ञानिकों की टीम ने 2013 के महाकुंभ और 2019 के कुंभ में 6 शाही स्नान के दिन सात स्नान घाट से गंगाजल के 760 नमूने लिए। पानी की जांच करने पर पता चला कि इस दिन नदी में सबसे ज्यादा माइक्रोबियल लोड है। यानी कि पानी में सूक्ष्म जीवियों की संख्या बढ़ी हुई थी। दुनिया भर से आए भांति–भांति के लोगों से निकले जीवाणु गंगाजल में घुले मिले थे, लेकिन इनसे संक्रमण की बजाय रोग से लड़ने की शक्ति मिलती दिखी।

इस रिसर्च के अनुसार, पानी के बहाव और फैलाव की वजह से जीवाणुओं का लेयर पतला या गैर सक्रिय हो जाता है। ऐसे में यहां नहाने वालों को संक्रमित करने के बजाय उनकी प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने का काम करते हैं। मौनी अमावस्या पर गंगाजल नेचुरल वैक्सीन की तरह काम करता है। संवाद

गंगा के पांच स्पॉट से पानी के 760 सैंपल की जांच

बीएचयू के पूर्व रिसर्चर डॉ. वाचस्पति त्रिपाठी ने कहा कि कुंभ में शाही स्नान से पहले और बाद में गंगा के पांच स्पॉट से पानी के 760 नमूने लिए गए। ये पानी कुंभ के पूर्व, मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के शाही स्नान के दौरान इकट्ठा किए गए।

लिफ्ट मांगकर रोका फिर असलहा सटाया, मिर्च पाउडर डालकर लूट ले गए बाइक

नियामताबाद। चंदरखा नहर पर सोमवार की रात करीब 9 बजे दुकान से घर लौट रहे युवक की बाइक बदमाशों ने लूट ली। बदमाशों ने पहले लिफ्ट मांगकर उसे रोका फिर असलहा सटाकर धमकाने लगे। युवक उनसे लड़ने लगा तो एक बदमाश ने उसके आंख में मिर्च पाउडर डाल दिया और बाइक लूटकर भाग गए। अलीनगर थाना क्षेत्र के भरछा गांव निवासी मनोज कुमार की सिंधीताली में इलेक्ट्रॉनिक की दुकान है। सोमवार की रात करीब 9 बजे वे दुकान बंद कर अपनी बाइक से घर लौट रहे थे। रास्ते में चंदरखा नहर पर एक व्यक्ति ने उन्हें रोककर जीवनाथपुर जाने की बात कही। इस पर मनोज ने उसे जीवनाथपुर जाने का रास्ता बताया। इसी बीच उसने गाली देते हुए मनोज को असलहा सटा दिया। इस पर मनोज भी उससे उलझ गए। दोनों में मारपीट होने लगी। मारपीट के दौरान दोनों सड़क किनारे नीचे खेत में चले गए। इसी बीच बाइक से दो व्यक्ति और आ गए। उनमें से एक ने मनोज की आंख पर मिर्च पाउडर डाल दिया। इसके बाद बदमाश उनकी बाइक लेकर भाग गए। मनोज ने इसकी जानकारी मोबाइल फोन से पुलिस को दी। मनोज से लड़ाई के दौरान बदमाशों का तमंचा खेत में गिर गया। बाद में घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने खेत में तमंचा बरामद किया। थाना प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार मिश्रा का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला संदिग्ध लग रहा है। हालांकि पूर्व में दोनों के बीच किसी विवाद को लेकर भी जांच पड़ताल की जा रही है। जल्द ही आरोपी पुलिस की पकड़ में होंगे।

लापरवाही में सफाई निरीक्षक व प्रभारी को प्रतिकूल प्रविष्टि, वेतन रोका

वाराणसी। नगर आयुक्त अक्षत वर्मा ने शिवपुर के सफाई एवं खाद्य निरीक्षक विनयानंद द्विवेदी और सफाई प्रभारी संजू का वेतन रोकते हुए प्रतिकूल प्रविष्टि दी। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों जिले के प्रभारी कैबिनेट मंत्री सुरेश खन्ना के निरीक्षण के दौरान कांशीराम आवास योजना की कॉलोनी में सफाई न होने पर नाराजगी जताई गई थी।

पशु तस्करी के दोषी को जज ने न्यायालय उठने तक की सुनाई सजा

चंदौली। सिविल जज जूनियर डिवीजन इंदु रानी ने मंगलवार को एक पशु तस्करी के आरोपी को दोषी ठहराते हुए न्यायालय उठने तक वहीं मौजूद रहने की सजा सुनाई। इसके बाद दोषी पूरे दिन न्यायालय में बैठा रहा। उस पर चार हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया गया। 16 फरवरी 1994 को चंदौली जिले के मुगलसराय थाने में बुलंदशहर के गुलावटी थाना क्षेत्र के महेंद्र सिंह पर पशु तस्करी का मुकदमा दर्ज किया गया था। इस बीच वह कई बार जेल गया। मेडिकल आदि के आधार पर जेल से बाहर आता रहा। मंगलवार को सिविल जज जूनियर डिवीजन इंदु रानी की अदालत ने महेंद्र सिंह को न्यायालय उठने तक की सजा सुनाई। साथ ही चार हजार रुपये अर्थदंड से दंडित किया। अर्थदंड न देने पर 10 दिन की अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी।

गरीबों को शिक्षा से वंचित रखना चाहती है सरकार : मनोज

चंदौली। सपा के राष्ट्रीय सचिव व सैयदराजा के पूर्व सपा विधायक मनोज सिंह डब्लू ने मंगलवार को भाजपा सरकार पर निशाना साधा। आरोप लगाया कि भाजपा सरकार गरीबों को शिक्षा से वंचित रखना चाहती है। यही वजह है कि भाजपा सरकार में स्कूल व कॉलेज भवन जर्जर अवस्था में पड़े हुए हैं।

इंडोनेशिया और भारत का जेनेटिक संबंध 70 हजार साल पुराना

वाराणसी। प्दकपं दक प्दकवदमेपं रू इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्राबोओ सुबियांतो का ये दावा सही है कि उनमें भारत का डीएनए है। बीएचयू और एस्टोनिया के वैज्ञानिकों का रिसर्च कहता है कि इंडोनेशिया की सभी 27 करोड़ आबादी में भारत का ही डीएनए है। हर एक इंडोनेशियाई में डीएनए का कम से कम 20–30 फीसदी हिस्सा भारतीय ही है।

देश के 76वें गणतंत्र दिवस समारोह में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्राबोओ सुबियांतो बतौर मुख्य अतिथि

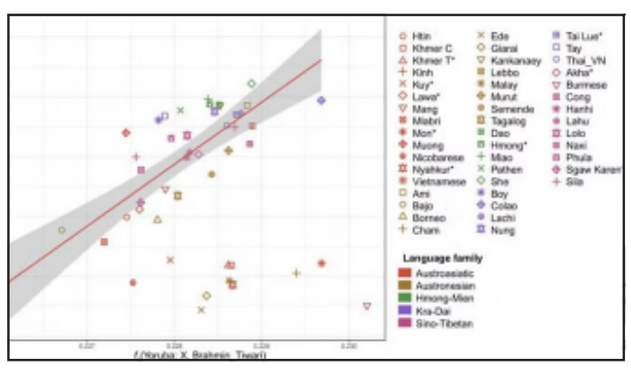

शामिल हुए। 26 जनवरी को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की ओर से दिए गए भोज के दौरान उन्होंने कहा कि उनके पास इंडियन डीएनए है। इस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ जोर से हंस पड़े। इसके बाद वह वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल होने लगा।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति के इस दावे को बीएचयू का रिसर्च साबित करता है। बीएचयू के जंतु विज्ञान विभाग के जीन वैज्ञानिक प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे ने बताया कि 70 हजार साल पहले से लेकर 1700 पूर्व तक भारत और इंडोनेशिया का जेनेटिक संबंध रहा है। इस दौरान भारत के कई राजा इंडोनेशिया गए हुए थे।

जल्द ही होगा चौथा रिसर्च

इंडोनेशियाई लोगों का डीएनए वर्तमान में अंडमान–निकोबार के आदिवासियों और सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों में भी मिला है। प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे और एस्टोनिया के तार्तू विवि के वैज्ञानिकों ने इन संबंधों के अध ययन के लिए कुल तीन शोध किए हैं।

महाकुम्भ मेला 2025 के दौरान मेला विशेष रेलगाड़ियों का संचालन

भारतीय रेल द्वारा मेले में आने वाले अपने सम्मानित श्रद्धालुओं/रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये विभिन्न मेला विशेष रेलगाड़ियों के संचालन की व्यवस्था की गयी है। इसी क्रम में समय-सारणीबद्ध निम्न रिंग रेल सेवा सहित आरक्षित, अनारक्षित मेला विशेष रेलगाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य मेला विशेष रेलगाड़ियों का संचालन आवश्यकतानुसार किया जायेगा।

दिनांक 30.01.2025 (गुरुवार) को चलने वाली समय-सारणीबद्ध मेला विशेष रेलगाड़ियों की सूची:-

गाड़ी सं.	स्टेशन से	प्रस्थान का समय	स्टेशन तक	आगमन का समय	मार्ग के अन्य स्टेशनों पर ठहराव
अनारक्षित रिंग रेल सेवा रेलगाड़ियों की सूची					
04111	प्रयागराज जं.	06.00	प्रयागराज जं.	18.50	प्रयागराज रामबाग, झूंसी, हंडिया खास, ज्ञानपुर रोड, माधोसिंह, बनारस, भदोही, जंघई, मड़ियाहूँ, ज़फ़राबाद, जौनपुर, शाहगंज जं., अकबरपुर, गोशाईंगंज, अयोध्या धाम, अयोध्या कैंट, सुल्तानपुर, माँ बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़, मऊआइमा, फाफामऊ एवं प्रयाग
04112	प्रयागराज जं.	06.30	प्रयागराज जं.	21.00	
04113	प्रयागराज जं.	17.30	प्रयागराज जं.	07.45	
04114	प्रयागराज जं.	17.45	प्रयागराज जं.	08.00	
04120	प्रयागराज जं.	13.30	प्रयागराज जं.	04.00	
04109	गोविन्दपुरी	15.45	गोविन्दपुरी	07.00	कानपुर सेन्ट्रल, बिन्दकी रोड, फतेहपुर, खागा, सिराथू, भरवारी, प्रयागराज जं., नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., चित्रकूट धाम कर्वी, अतर्रा, बांदा जं., रागौल, भरुआ सुमेरपुर, हमीरपुर रोड, घाटमपु एवं भीमसेन
04110	गोविन्दपुरी	07.30	गोविन्दपुरी	21.30	
01803	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	12.00	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	09.00	चिरगाँव, मोंठ, ऐट, उरई, कालपी, पुखरायाँ, भीमसेन, गोविन्दपुरी, बिन्दकी रोड, फतेहपुर, खागा, सिराथू, भरवारी, प्रयागराज जं., नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर जं., चित्रकूट धाम कर्वी, अतर्रा, बांदा जं., महोबा, कुलपहाड़, हरपालपुर, मऊ रानीपुर, निवाड़ी एवं ओरछा
01804	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	20.10	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	16.30	
अनारक्षित मेला विशेष रेलगाड़ियों की सूची					
01809	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	04.00	प्रयागराज छिवकी	14.45	ओरछा, बरुआ सागर, निवाड़ी, मगरपुर, टेहरका, रानीपुर रोड, मऊरानीपुर, रोरा, हरपालपुर, घुटई, बेलाताल, कुलपहाड़, चरखारी रोड, महोबा, बरिपुरा, कबरई, मटौंध, खैरार, बाँदा, डिंगवाही, खुरहण्ड, अतर्रा, बदौंसा, भरतकूप, शिवरामपुर, चित्रकूट धाम कर्वी, खोह, बहिलपुरवा, मानिकपुर, डभौरा, बरगढ़ एवं शंकरगढ़
01810	प्रयागराज छिवकी	16.00	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	05.00	
01811	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	10.10	प्रयागराज छिवकी	22.50	
01812	प्रयागराज छिवकी	23.20	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	13.10	
01813	बाँदा	19.10	कटनी	05.15	डिंगवाही, खुरहण्ड, अतर्रा, बदौंसा, भरतकूप, शिवरामपुर, चित्रकूट धाम कर्वी, खोह, बहिलपुरवा, ओहन, सतना एवं मैहर
01814	कटनी	07.00	बाँदा	14.50	
01817	बीना जं.	11.00	प्रयागराज छिवकी	02.50	ललितपुर, टीकमगढ़, खड़गपुर,महाराजा छत्रसाल छतरपुर खजुराहो, सिंहपुर-डुमरा, महोबा जं., बांदा, अतर्रा, चित्रकूट धाम कर्वी, मानिकपुर एवं शंकरगढ़
01818	प्रयागराज छिवकी	03.45	बीना जं.	17.30	
01819	बीना जं.	17.50	सूबेदारगंज	09.20	ललितपुर, टीकमगढ़, खड़गपुर, महाराजा छत्रसाल छतरपुर, खजुराहो, महोबा, खैरार, रागौल, भरुआ सुमेरपुर,घाटमपुर, गोविंदपुरी, बिन्दकी रोड, फतेहपुर, खागा, सिराथू एवं भरवारी
01820	सूबेदारगंज	09.50	बीना जं.	03.00	
00109	प्रयागराज	05.00	कानपुर सेन्ट्रल	10.15	सूबेदारगंज, भरवारी, सिराथू, खागा, फतेहपुर एवं बिन्दकी रोड,
00110	प्रयागराज	14.00	कानपुर सेन्ट्रल	17.30	
00111	प्रयागराज	16.05	कानपुर सेन्ट्रल	19.30	
00112	प्रयागराज	18.00	कानपुर सेन्ट्रल	22.30	
00113	प्रयागराज	19.50	कानपुर सेन्ट्रल	01.25	
00114	प्रयागराज	21.30	कानपुर सेन्ट्रल	02.40	
00210	प्रयागराज	05.00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	08.30	नैनी जं., मेजा रोड, मांडा रोड, विन्ध्याचल, मिर्जापुर एवं चुनार
00211	प्रयागराज	09.30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	13.20	
00212	प्रयागराज	12.00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	15.15	
00213	प्रयागराज	14.00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	17.15	
00214	प्रयागराज	15.30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	20.45	
00215	प्रयागराज	19.30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	00.35	
00216	प्रयागराज	22.00	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	05.10	
00403	प्रयागराज छिवकी	10.30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	13.50	मेजा रोड, मांडा रोड, विन्ध्याचल, मिर्जापुर एवं चुनार
00404	प्रयागराज छिवकी	20.30	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	03.30	
00306	प्रयागराज जं.	13.30	वी. लक्ष्मीबाई झाँसी	01.00	नैनी, शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, चित्रकूट धाम कर्वी, अतर्रा, बांदा जं., महोबा, कुलपहाड़, हरपालपुर,मऊ रानीपुर, निवाड़ी, ओरछा
00506	प्रयागराज छिवकी	16.45	बाँदा	22.45	शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, चित्रकूट धाम कर्वी एवं अतर्रा
00605	नैनी जं.	11.25	बाँदा	17.00	
00305	प्रयागराज जं.	10.40	कटनी	17.30	नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, टिकरिया, मझिगवां, जैतवार, सतना, मैहर एवं झुकेही
00308	प्रयागराज जं.	20.15	कटनी	04.00	
00307	प्रयागराज जं.	18.20	सतना	00.30	नैनी जं., शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, टिकरिया, मझिगवां एवं जैतवार
00505	प्रयागराज छिवकी	15.00	कटनी	22.00	शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, टिकरिया, मझिगवां, जैतवार, सतना, मैहर एवं झुकेही
00508	प्रयागराज छिवकी	20.55	कटनी	04.30	
00507	प्रयागराज छिवकी	18.55	सतना	01.00	शंकरगढ़, बरगढ़, डभौरा, मानिकपुर, टिकरिया, मझिगवां एवं जैतवार
00606	नैनी जं.	21.00	सतना	03.30	
04117	प्रयागराज जं.	22.20	अयोध्या कैण्ट	03.20	प्रयाग, फाफामऊ, मऊआइमा, माँ बेल्हा देवी धाम प्रतापगढ़ एवं सुल्तानपुर
04118	अयोध्या कैण्ट	05.15	प्रयागराज जं.	10.15	
08248	रीवा	06.45	मानिकपुर	10.15	तुर्की रोड, बघई रोड, हिनौतारामबन, कैमा, जैतवार एवं मझगवां
08247	मानिकपुर	11.15	रीवा	14.30	
01821	ग्वालियर	21.40	सूबेदारगंज	08.00	शनिचरा, मलनपुर, गोहद रोड, सोनी, भिण्ड, इटावा जं., फफूंद, झींझक, रुरा एवं गोविंदपुरी
01822	सूबेदारगंज	08.30	ग्वालियर	18.00	
उत्तर मध्य रेलवे से चलने वाली आरक्षित मेला विशेष रेलगाड़ियों की सूची					
04145	सूबेदारगंज	21.33	दिल्ली	08.55	अलीगढ़ जं., टूण्डला जं., इटावा जं., गोविंदपुरी एवं फतेहपुर

नोटः रेल यात्रियों को सुझाव दिया जाता है कि उपरोक्त रेलगाड़ियों की समय-सारणी, संरचना एवं अन्य स्टेशनों पर ठहराव से संबंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139, एनटीईएस ऐप एवं रेल मदद वेबसाइट www.railmadad.indianrailways.gov.in के माध्यम से अद्यतन जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

महाकुम्भ 2025 रेलवे टोल फ्री नं.1800 4199 139 | उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 195/25 FA

संगम पर भगदड़ मचने का पर स्वामी यतींद्रानंद ने जताया दुख, प्रशासन घटना के लिए जिम्मेदार

प्रयागराज। जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी यतींद्रानंद गिरि ने संगम नोज पर हुई घटना पर दुख व्यक्त किया है। कहा कि मौनी अमावस्या को संगम नोज पर हुई भगदड़ की सूचना अत्यंत पीड़ादायक है। इसमें कई लोगों की मृत्यु हुई है और बड़ी संख्या में लोग घायल हो गए हैं। मेला प्रशासन की हठधर्मिता के चलते यह घटना घटी है। पहली बार किसी कुंभ में ऐसी अव्यवस्था देखी है। साधु–संतों को बुनियादी सुविधाएं तक नहीं दी गई हैं। प्रशासन केवल वीआईपी जनों की आवभगत में लगा है। कुंभ में ट्रैफिक व्यवस्था तो पहले से ही ध्वस्त थी। जगह–जगह बैरिकेडिंग कर रास्ता अवरुद्ध कर दिया गया। पांटून पुलों से पैदल तक नहीं जाने दिया जा रहा है। पुल और सड़क सिर्फ वीआईपी के लिए आरक्षित कर दिए गए हैं। प्रशासन ने पूरे मेले को एक इवेंट बनाकर रख दिया है। आगे कहा कि मेला प्रशासन के अधिकारी कुंभ मेले की आध्यात्मिक और धार्मिक भावनाओं को ना जानते हैं और ना ही मानते हैं। मेले को भव्य और दिव्य कहा गया लेकिन वीआईपी और व्यावसायिक बनाकर भव्य बनाने का प्रयास तो हुआ किंतु मेले की आत्मा आध्यात्मिक और धार्मिकता जो की दिव्यता थी उसको दरकिनार कर दिया गया। शासन और प्रशासन ने पूरा मेला एक इवेंट बनाकर रख दिया कुंभ कोई इवेंट या व्यावसायिक मेला नहीं है। कुंभ एक धार्मिक और आध्यात्मिक मेला है। यहां देवता

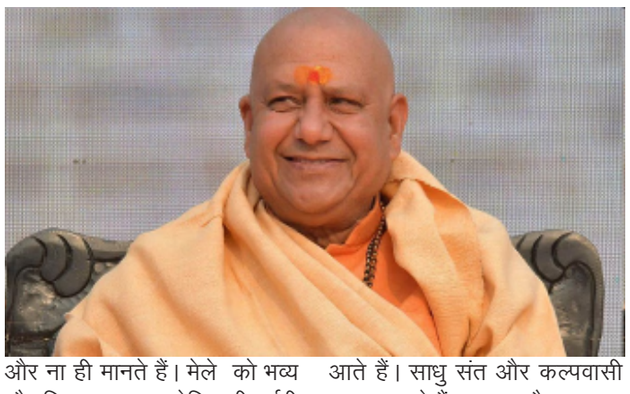

आते हैं। साधु संत और कल्पवासी साधना करते हैं। शासन और प्रशासन दोनों के द्वारा देवताओं का मान सम्मान नहीं किया गया। उनको आदर नहीं दिया गया। साधु संत तथा कल्पवासियों का आदर और उनकी सुविधाओं का ध्यान नहीं रखा गया जिसके चलते मकर संक्रांति का स्नान भी दुर्व्यवस्थाओं से भरा रहा। इस मेले का मुख्य स्नान मौनी अमावस्या का देवताओं की नाराजगी को प्रकट करते हुए स्वीकार नहीं किया है। मेले में भीड़ यह दुर्व्यवस्था का कारण नहीं है, क्योंकि उत्तर प्रदेश सरकार ने पूरे विश्व में निमंत्रण दिया 144 साल के बाद कुंभ आ रहा है। क्या महाकुंभ का इतिहास क्या केवल 144 वर्ष का है। प्रत्येक 12 वर्ष में लगने वाला कुंभ अपने आप में 144 वर्ष बाद आता है। यह महाकुंभ कैसे हो गया। सरकार खुद कहती थी 40 से 45 करोड लोग आएंगे। सरकार का जो अनुमान था लोग उसी अनुमान के अंतर्गत ही आए हैं उससे अधिक नहीं तो फिर शासन और प्रशासन ने उसी अनुमान के अनुसार व्यवस्था क्यों नहीं किया। यह प्रश्न उठता है समूचे मेले में चाहे मेला अधिकारी हो अपार मेला अधिकारी हो एसएसपी मेला, डीआईजी मेला किसी भी अधिकारी का मिलना तो दूर फोन तक उठना भी संभव नहीं है। पूरे मेले में केवल चार पांच राजनीतिक व आर्थिक प्रभावशाली संतों के अलावा मेला प्रशासन ने किसी को भी महत्व नहीं दिया। कुंभ मेले का दुखद पहलू यह है की साधु संत अपने परंपरागत स्नान को नहीं कर सके तथा अखाड़े के देवता भी स्नान से वंचित रहे। शायद मेला प्रशासन के व्यवहार से देवता संतुष्ट नहीं थे, इसलिए देवताओं ने स्नान नहीं किया। अब देखना है मेले की दुर्व्यवस्था आज की घटना की नैतिक जिम्मेदारी कौन लेता है। उत्तर प्रदेश सरकार कुंभ में पधारे साधु संत तपस्वी और कल्पवासियों तथा श्रद्धालु भक्तजनों की भावनाओं और पीड़ा को कितना समझ पाती है और ऐसे संवेदनहीन मेला प्रशासनिक अधिकारियों के ऊपर क्या कार्रवाई करती है। हम अखाड़ा परिषद के सभी पदाधिकारी को साधुवाद धन्यवाद देते हैं ।

जिस घाट के करीब हैं, वहीं स्नान करें, संगम नोज पर भगदड़ के बाद अखाड़ा परिषद की लोगों से अपील

प्रयागराज। प्रयागराज में महाकुंभ के दूसरे अमृत स्नान पर्व मौनी अमावस्या पर संगम में भगदड़ मच गई। इस दौरान कई लोगों के घायल होने की खबर है। संगम पर भगदड़ के बाद अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रवींद्र पुरी ने लोगों से अपील की है। उन्होंने कहा कि जो घटना हुई उससे हम बहुत दुखी हैं। हमारे साथ हजारों श्रद्धालु थे। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि आज के बजाय वसंत पंचमी पर स्नान के लिए आएं। संगम घाट पहुंचने के बजाय उन्हें जहां भी पवित्र गंगा दिखे, वहीं डुबकी लगा लेनी चाहिए। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रविन्द्र पुरी ने बताया कि इस वक्त 12 करोड़ से अधिक श्रद्धालु प्रयागराज में हैं। इतनी बड़ी तादाद में भीड़ को कंट्रोल करना मुश्किल होता है। हमारे साथ लाखों की संख्या में संतों का हुजूम है। हमारे लिए श्रद्धालुओं की सुरक्षा सबसे ज्यादा जरूरी है। उन्होंने कहा कि जब भीड़ कम हो जाएगी, तो हम पवित्र स्नान के लिए आगे बढ़ेंगे। महाकुंभ में हुई भगदड़ के बाद सीएम योगी ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वह संगम नोज जाने के बजाय निकट के घाट पर स्नान कर लें। सीएम योगी ने कहा है कि स्नान के लिए कई घाट बनाए गए हैं। लोग वहां स्नान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में प्रशासन के नियमों का ध्यान रखें और किसी प्रकार की अफवाह में न आएं। धर्म गुरुओं ने भी श्रद्धालुओं से अपील की है। स्वामी रामभद्राचार्य ने महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं से अपील की कि वे सभी संगम में स्नान के बजाय निकटतम घाट पर स्नान करें। लोग अपने शिविर से बाहर न निकलें। अपनी और एक दूसरे की सुरक्षा करें। उन्होंने वैष्णव सम्प्रदाय के प्रमुख संत की हैसियत से सभी अखाड़ों और श्रद्धालुओं से अफवाहों से बचने का आह्वान किया। वहीं, महाकुंभ नगर प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अफवाहों पर ध्यान न देने और संयम बरतने की अपील की है। बताया जा रहा है कि प्रयागराज के संगम तट पर अमृत स्नान से पहले देर रात करीब 2 बजे भगदड़ मच गई।

महाकुंभ में पहली बार एक मंच पर आए तीन पीठों के शंकराचार्य, जारी किया संयुक्तधर्मादेश

प्रयागराज। महाकुंभ में पहली बार देश के तीन पीठों के शंकराचार्य एक ही मंच पर मिले और सनातन के लिए संयुक्त धर्मादेश जारी किया। धर्मादेश में देश की एकता, अखंडता, सामाजिक समरसता और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण निर्णय किए गए। वहीं, शंकराचार्यों ने आह्वान किया कि महाकुंभ पर्व पर प्रत्येक सनातनी को प्रयागराज आना चाहिए। उन्होंने महाकुंभ के भव्य आयोजन के लिए योगी सरकार और प्रशासन को आशीर्वाद भी दिया। महाकुंभ में देश के तीन पीठों के शंकराचार्यों ने पहली बार मंच साझा किया है। महाकुंभ में चल रही परम धर्म संसद के शिविर में तीन पीठों के शंकराचार्यों ने समवेत रूप से एक संयुक्त धर्मादेश भी जारी किया है। श्रृंगेरी शारदा पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी विधु शेखर भारती जी, द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती जी और ज्योतिष पीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती जी महाराज ने परम धर्मसंसद में हिस्सा

लिया और सनातन संस्कृति की रक्षा और उन्नयन के लिए 27 धर्मादेश भी जारी किए। इस अवसर पर शंकराचार्य स्वामी सदानंद ने संस्कृत भाषा के महत्व पर जोर दिया। श्रृंगेरी के शंकराचार्य विदुशेखर भारती ने गौ माता को राष्ट्र माता घोषित करने और गौ माता की विशेष रूप से रक्षा करने की बात कही। ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने संस्कृत भाषा के महत्व पर जोर देते हुए सरकार को संस्कृत भाषा के लिए बजट देने पर जोर दिया। 27 बिंदुओं वाले धर्मादेश में देश की एकता, अखंडता और समरसता के साथ सनातन धर्म की संस्कृति की रक्षा, विस्तार और संस्कृत भाषा के विस्तार पर जोर दिया गया। धर्मादेश में नदियों और परिवार रूपी संस्था को बचाने के लिए सबको आगे आने का आदेश दिया गया। धार्मिक शिक्षा को हिंदुओं का मौलिक अधिकार बनाने पर भी इसमें जोर दिया गया। यह भी कहा गया कि अपने धार्मिक प्रतीकों को पहचानें और उसकी रक्षा अवश्य करें। हर विद्यालय में देव मंदिर हो। धर्मादेश के मूल में गौ हत्या पर रोक है और उसे राष्ट्र माता घोषित करने का आदेश दिया गया। पहले ही धर्मादेश में कहा गया कि गाय को माता मानने वाले देश भारत की धरती से गौहत्या का कलंक मिटना चाहिए। विश्वमाता गौमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान मिलना चाहिए और उनकी हत्या को दण्डनीय अपराध घोषित करना चाहिए। गौहत्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप से जो जुड़ा हो वह हिंदू नहीं हो सकता। उसे हिंदू धर्म से बहिष्कृत किया जाए।

सबसे बड़े अमृत स्नान के लिए अखाड़ों की सजीं शाही सवारियां, २१ श्रृंगार करके निकलेंगे नागा

प्रयागराज। चुस्त सुरक्षा इंतजामों के बीच मौनी अमावस्या पर सबसे बड़ा अमृत स्नान संगम तट पर बुधवार की सुबह 6रू15 बजे आरंभ होगा। इसके लिए शाही सवारियां सज गई हैं। आधी रात के बाद तक जूना अखाड़े के माईबाड़ा से लेकर नागा संन्यासियों के धूने तक संन्यासिनियों और नागाओं का भस्म,चंदन शृंगार होता रहा। देर रात शाही सवारियां भी सजा दी गईं। रथों, बग्घियों, हाथी, ऊंट, घोड़ों की सवारियों के साथ अखाड़ों के पीठाधीश्वर, महंत, महामंडलेश्वर सज धज कर अमृत स्नान के लिए निकलेंगे। जूना अखाड़े में चांदी के हौदे के साथ रथों और बग्घियों को फूलों से सजाया जाता रहा। हाथियों

के सूंड, मस्तक और हौदे भी रंग–रोगन किए जाते रहे। जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरि का मत्स्याकार विशाल रथ देर रात तैयार कर लिया गया। वह अपने शिष्य, शिष्याओं के साथ इसी रथ पर सवार होकर सुबह अमृत स्नान के लिए निकलेंगे। इसी तरह श्रीरामानंदी पंचायती निर्मोही अनि अखाड़े के महामंडलेश्वर बिहारी दास और पान वाले बाबा का अश्व रथ भी सजा दिया गया। वह अपने शिष्यों के साथ अश्व रथ पर सवार होकर संगम जाएंगे। इसी तरह अमेरिका की अरबपति महिला उद्यमी लॉरेन जॉब्स को महाकुंभ में तीन का कल्पवास और साधना कराकर सुर्खियां बटोरने वाले निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशानंद गिरि भी अपने शाही रथ पर सवार होकर निकलेंगे। इस बार निरंजनी अखाड़े के रथ पर एक बार फिर मॉडल हर्षा रिछारिया को शाही सवारी कराने का अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रवींद्र पुरी महाराज ने एलान किया है।

मौनी अमावस्या पर महाकुंभ आने वाली गाड़ियों को यहां मिलेगी पार्किंग की जगह

प्रयागराज। मौनी अमावस्या के मौके पर अमृत स्नान के लिए कल यानी बुधवार को 8 से 9 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। त्रिवेणी संगम में इस मौके पर विशेष अमृत स्नान के लिए भक्तों का सैलाब पहले से ही जुट रहा है। हालांकि प्रशासन ने दावा किया है कि उनकी तैयारी भी पूरी है। करोड़ों की भीड़ को नियंत्रण करने के लिए सरकार और मेला प्रशासन से 26 जनवरी के बाद से ही यातायात को लेकर नए नियम जारी कर रखे हैं। नए नियमों के अनुसार 26 जनवरी से ही कुंभ मेला क्षेत्र को नो व्हीकल जोन घोषित कर रखा है। इतना ही नहीं विशेष पास भी 3 फरवरी तक निरस्त कर दिए गए हैं। प्रशासन ने प्रयागराज आने वाले वाहनों के लिए भी विशेष रुट प्लान जारी किए गए हैं साथ ही पार्किंग की भी व्यवस्था की गई है।

सुबह 11 बजे तीनों शंकराचार्य एक साथ करेंगे स्नान, प्रशासन ने जारी की सूचना

प्रयागराज। संगम पर भगदड़ मचने के बाद पैदा हुई अव्यस्था को संभालने के बाद प्रशासन ने तीनों शंकराच्यों को एक साथ स्नान करने की तैयारी की है। तीनों शंकराचार्य द्वारका पीठ के स्वामी सदानंद सरस्वती, ज्योतिषपीठ के स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती और श्रृंगेरी मठ के विधु शेखर भारती एक साथ सेक्टर 22 से संगम के लिए सुबह 11 बजे रवाना होंगे। मौनी अमावस्या पर भारी भीड़ और भगदड़ की घटना के चलते सभी अखाड़ों ने अमृत स्नान न करने का एलान किया था। यह एलान अखाड़ा परिषद अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र गिरी ने निरंजन छावनी से किया। हालांकि, अब खबर है कि हालात सामान्य होते ही सभी अखाड़े अमृत स्नान कर सकते हैं। इसके अलावा अखाड़ा परिषद अध्यक्ष ने कहा जिस तरह से श्रद्धालुओं की भीड़ है और भगदड़ की घटना सामने आई है उससे अखाड़े ने स्नान न करने का फैसला लिया है। अखाड़े के वहां जाने से स्थिति और भी बिगड़ सकती थी। इससे पहले अखाड़ा परिषद अध्यक्ष के एलान के बाद महानिर्वाणी अखाड़ा अपना जुलूस बीच रास्ते से ही वापस लेकर छावनी लौट आया वहीं जूना अखाड़े ने भी अपना जुलूस छावनी में वापस बुला लिया। हादसे की सूचना मिलने के बाद अंजलि अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर कैलाशनंद गिरि भी साथ छावनी पहुंचे। महाकुंभ में भगदड़ में हुई मौतों पर पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के महामंडलेश्वर प्रेमानंद पुरी रो पड़े। उन्होंने कहा कि हमने पहले ही कहा था कि कुंभ की सुरक्षा को आर्मी के हवाले किया जाए, लेकिन किसी ने हमारी नहीं सुनी। प्रशासन पूरी तरह फेल साबित हुआ है। प्रशासन सिर्फ वीआईपी की जी हुजूरी में लगा रहा। इसके अलावा उन्हें कुंभ से कोई मतलब नहीं है। किसी का बेटा चला गया तो किसी का बाप चला गया। पिछले स्नान के बाद ही हमने प्रशासन को सचेत किया था।

ठीक तरह से नहीं हो पाया शाही स्नान

हरिद्वार। प्रयागराज महाकुंभ में मची भगदड़ के चलते शाही स्नान भी ठीक तरह से नहीं हो पाया। हरिद्वार से प्रयागराज महाकुंभ में गए गंगा सभा के महामंत्री तन्मय वशिष्ठ ने बताया कि महाकुंभ में श्रद्धालुओं में हुई भगदड़ के चलते शाही स्नान भी ठीक तरह से नहीं हो पाया। भगदड़ के वीडियो की सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। सरकार और अखाड़े के महामंडलेश्वर कुंभ की व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने में लगे हैं। सरकार ने महाकुंभ के अंदर आने वाली बसों की एंट्री बंद कर दी है। श्रद्धालुओं के महाकुंभ में आने की वजह श्रद्धालुओं का बाहर जाना अधिक हो रहा है। बावजूद इसके महाकुंभ में करोड़ श्रद्धालुओं की भीड़ जमा है। दोपहर के बाद स्थिति धीरे–धीरे सामान्य हो रही है।

कुंभ में गए मुसाबनी के रहने वाले शिवराज गुप्ता का कुंभ मेला क्षेत्र में हुई भगदड़ में हुआ निधन

मुसाबनी। प्रयागराज कुंभ में पवित्र स्नान के लिए गए मुसाबनी सुंदर नगर के रहने वाले शिवराज गुप्ता का मेला क्षेत्र में मंगलवार की रात लगभग 1:30 बजे भगदड़ में दबने के बाद सांस रुकने से आकस्मिक निधन हो गया है। शिवराज गुप्ता जो पूर्व में कॉपरेटिव बैंक में कार्य करते थे।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062